

## 8. Plato's views on Communism -

प्लेटो के साम्यवाद संबंधी विचार -

उत्तर: - Plato की Republic का मुख्य उद्देश्य ज्ञान पर आधारित एक आदर्श राज्य की स्थापना करना है। इस उद्देश्य की प्राप्ति हेतु Plato दो साधनों का प्रयोग करता है -  
(i) शिक्षा विज्ञान का, (ii) साम्यवाद का। यह हमारा संबंध केवल साम्यवाद से ही है।

Plato की मान्यता है कि Property एवं Family का मोह संस्कृत वर्ग की लालची और स्वार्थी भावना है परिणामस्वरूप वे निःस्वार्थ एवं निष्पक्ष भाव से राज्य की सेवा करने में असमर्थ हो जाते हैं। यही कारण है कि उसने संस्कृतों (Guardians) को संपत्ति एवं परिवार से वांचेन किया ताकि आदर्श राज्य की स्थापना पूर्ण रूप से हो सके।

पण्डित इस संबंध में यह उल्लेखनीय है कि Plato का साम्यवाद केवल और केवल संस्कृतों पर ही लागू होता है। संस्कृतों से Plato की तात्पर्य दार्शनिक शासक एवं सैनिक वर्ग से है प्लेटो के साम्यवाद में निम्नालिखित मुख्य दो बातें हैं -

- (i) संस्कृतों को व्यापक संपत्ति से वांचेन करना,
- (ii) उन्हें वैवाहिक जीवन से वर्जित करना जिससे पति-पत्नी व्यवस्था के स्थान पर एक ऐसी नई व्यवस्था की स्थापना हो कि यौन-नियंत्रण द्वारा सर्वोत्तम संगत को उत्पन्न किया जा सके।

सच पूछा जाय तो प्लेटो के साम्यवादी विचारों पर तत्कालीन परिस्थितियों का पूर्ण प्रभाव था। Plato के समय में आग्निआलिगे के हित में शासन-व्यवस्था संचालित होता था, शोषण था प्रचलित था और आर्थिक तत्त्व राजनीतिक वातावरण को प्रभावित करते थे जिससे राजनीतिक स्थायित्व का अभाव था साथ-ही-साथ ऐसे में महिला वर्ग की स्थिति अत्यन्त खराब थी। वास्तविकता में ही उनकी आदमी बर दी जाती थी घर की चहारदीवारी में वे बन्द थीं, इनका कर्तव्य संगत की उत्पत्ति और उनके पालन-पोषण करने तक ही सीमित था। अतः प्लेटो ने अपनी साम्यवादी योजना में इन सभी कुराईयों को दूर करने का प्रयास किया है।

### संपत्ति की साम्यवाद (Communism of property)

Plato संपत्ति विषयक साम्यवाद का सार यह है कि शासकों और सैनिकों के पास किसी प्रकार की व्यापक संपत्ति नहीं होनी चाहिए। उन्हें न अपना घर होना चाहिए, न जमीन जमीन और न सोना चांदी हो। वे राज्य द्वारा व्यवस्थित भोजन (Bread & C) में निवास



करेंगे और सार्वजनिक भोजनालय में भोजन करेंगे। उत्पादक वर्ग उन्हें खाने-पीने हेतु आवश्यक वस्तुएँ प्रत्येक देगा जिसका उपयोग वे व्यक्तिगत रूप से नहीं करके सामुहिक रूप से सार्वजनिक भोजनालयों में करेंगे। Plato के साम्यवाद का सिद्धान्त केवल दो वर्गों पर ही लागू होगा है — उत्पादक वर्ग पर नहीं। वे जनता के सेवक होने में स्वामी नहीं। उन्हें किसी भोजन पर चाहरी करने पड़ने हैं। भोजन के आरोगिक उन्हें कोई वेतन नहीं मिलना। उन्हें सार्वजनिक कल्याण के हित में अपने शारीरिक एवं भौतिक सुखों को त्यागकर संयम, साधना और तपस्या का मार्ग अपनाना पड़ना है। इस अर्थ में Plato का साम्यवाद राजनीतिक है आर्थिक नहीं।

इस तरह स्पष्ट है कि संरक्षकों के लिए सम्पत्ति का उन्मूलन Plato के साम्यवादी सिद्धान्त का एक प्रमुख तत्व है। सम्पत्ति की लालसा शासकों को पतन करने देती है, उन्हें स्वार्थी बनाती है, राज्य की एकता को नष्ट करती है और न्याय के संचालन के मार्ग में बाधा उत्पन्न करती है। अतः Plato ने पाँच मुख्य तत्वों के आधार पर सम्पत्ति के साम्यवाद के सिद्धान्त का प्रतिपादन किया है। वे तत्व हैं — (i) नैतिक (ii) मनोवैज्ञानिक (iii) दार्शनिक (iv) व्यवहारिक एवं (v) राजनीतिक।

सम्पत्ति के उन्मूलन हेतु Plato ने जो तत्व प्रस्तुत किये हैं वह निश्चित रूप से नैतिक हैं। लोग इस बात पर विश्वास नहीं करना कि धर्म का अस्तित्व मात्र स्वार्थसिद्धि के लिए है। चूँकि Plato का साम्यवाद न्याय स्थापित करने के लिए यह आवश्यक है कि जैनिक वर्ग साम्यवाद के अनुशासन में रहकर अपने कर्तव्यों का पालन करें।

Plato ने मनोवैज्ञानिक आधार पर भी संपत्ति के साम्यवाद का समर्थन किया है। उसके अनुसार आसक्त और जैनिक आत्मा के विवेक और साहस तत्व का क्रमशः प्रतिपिधित्व करते हैं। अतः उन्हें सम्पत्ति की लालच नहीं होनी चाहिए। आसक्त और सैनिक वर्ग साम्यवादी व्यवस्था को स्वीकार कर ही विवेक और साहस के गुणों से प्रेरित हो सकते हैं।

व्यवहारिक रूप से Plato ने साम्यवादी योजना को इसलिए अनिवार्य माना है कि इसे विश्वास है कि आर्थिक एवं राजनीतिक शक्ति के एक ही जगह केन्द्रित होने से आसक्त भ्रष्ट हो जाते हैं और उनका विवेक कुंठित हो जाता है। वे स्वार्थी तथा कर्तव्यच्युत हो जाते हैं। वे राजनीतिक शक्तियों का प्रयोग अपने आर्थिक लाभ के



पिए करना शुरू कर देते हैं जिससे राज्य का वातावरण विषम हो जाता है। यही कारण है कि व्यवहारिकता की दृष्टि में रखकर Plato अपने साम्यवादी योजना द्वारा राजनीतिक शक्ति को आर्थिक शक्ति से पूर्णतः अलग करना चाहता है। अतः इस दृष्टि से Plato का साम्यवाद आदर्शवादी होने पर भी पूर्ण यथार्थवादी है।

व्यवहारिकता के साथ-साथ Plato का साम्यवाद दार्शनिक भी है। यही कारण है कि Plato ने अपने आसक्तों को सांसारिक सुखों की त्यागकर एक तपस्वी के समान संयमित जीवन बिताने का प्रयास एवं उनके वास्तव (वाली) जीवन की साम्यवादी योजना द्वारा नियंत्रित करने का प्रयास किया है।

प्लेटो उपर्युक्त सभी तर्कों से भी आधिक राजनीतिक उद्देश्यों की पूर्ति के लिए साम्यवादी सिद्धान्त का प्रतिपादन करता है। Plato का साम्यवाद दो अर्थों में राजनीतिक है —

पहला यह है कि साम्यवाद सिर्फ आसक्त एवं सैनिक वर्गों पर ही लागू होगा है उत्पादक वर्गों पर नहीं। आसक्त वर्ग तक सीमित होने के कारण Plato के साम्यवाद का स्वरूप मुख्यतः राजनीतिक है।

दूसरा यह है कि प्लेटो की यह मान्यता है कि धन आसक्तों एवं सैनिकों को प्रेरित करना है इसलिए वह दोनों को संपत्ति से अलग रखता है। अतः Plato के साम्यवाद का मुख्य उद्देश्य राजनीतिक ही है।

### स्त्रियों का साम्यवाद

Plato के साम्यवादी योजना का दूसरा महत्वपूर्ण तत्व स्त्रियों का साम्यवाद है। उसी योजना के अनुसार आसक्त एवं सैनिक वर्गों के स्त्री-पुरुष के बीच स्थायी रूप से विवाह नहीं होना चाहिए। न कोई छिपी का पति होगा न कोई छिपी की पत्नी। स्त्री-पुरुष सैन्यागारों में समान रूप से रहेंगे। छिपी परी के रहेंगे। उन्हें न तो स्थायी रूप से परिवार बनाने की छुट्टी दी जाएगी और न ही स्वतंत्र से प्रेम करने की। Plato का कथन है कि वे आसन कार्य एवं मत्त की रोज में इतने तपस्वी रहेंगे कि उन्हें व्यक्तिगत संबंधों पर अपना समय बँटाने की वक्त ही नहीं मिलेगा लेकिन राज्य के लिए संतान की आवश्यकता होती है अतः प्रेष्ठ संतान उत्पत्ति के लिए Plato ने यौन-संबंध को नियंत्रित करने की व्यवस्था भी की है।

Plato के अनुसार चार्मिक व्यवस्था के



भवसर पर प्रजनन कार्य हेतु सुयोग्य स्त्री-पुरुषों के बीच संभोग  
 किया होनी चाहिए। जिस स्त्री-पुरुष ने आर्वाजनिक सेवा के कार्य  
 में या युद्ध के क्षेत्र में अपनी विशेषता दिखाई है उन्हें संभोग क्रिया  
 में अनेक अवसर एवं विशेष सुविधा प्रदान की जाएगी जिससे  
 श्रेष्ठ लोग आधिकारिक संतान पैदा कर सकें। Plato का विश्वास है कि  
 परिपक्व, स्वस्थ एवं श्रेष्ठ नारी-पुरुषों के बीच समागम होने से संतान  
 भी श्रेष्ठ होती है। नारी 20-40 वर्ष के उम्र तक तथा पुरुष 25-55  
 वर्ष की उम्र तक संभोग कर्म करेंगे। इस अवधि में उत्पन्न संतान  
 की देखभाल राज्य करेगा पन्तु इन नियमों के विरुद्ध जो संतान  
 उत्पन्न होगी उन्हें या तो राज्य नहीं पालेगा या उन्हें भ्रष्ट स्थान पर  
 गड़ दिया जाएगा या जन्म से पूर्व ही Abortion (गर्भपात) करा दिया  
 जाएगा। संरक्षक वर्ग के स्त्री-पुरुषों की व्योहारों की दौड़ो  
 यत्र-तत्र अनियमित रूप से यौन-संबंध नहीं बनाने दिया जाएगा।  
 इन नियमों द्वारा जो भी बच्चा पैदा होगा उन्हें राज्य संभालेगा  
 शिशुपालन - गृह (Nursery) में रखा जाएगा तथा उनके पोषण-पालन  
 की जिम्मेदारी राज्य की होगी। नारी बच्चों की स्तनपान कराने वहाँ जा  
 सकती है लेकिन न वे अपनी संतान की पहचान सकती है और न  
 संतान ही अपनी माँ की। बच्चे संरक्षक वर्ग के अपने से उम्र में  
 बड़े सभी लोगों की अपनी माँ-बाप के समान तथा अपने बराबरी  
 वाली की भाँति बहन के समान मानेंगे। उन बच्चों का प्रशिक्षण  
 इस प्रकार होना कि वे समस्त राज्य की अपना परिवार  
 समझकर एक सच्चे सेवक की तरह उसकी सेवा कर सकें।

लेकिन यहाँ यह ध्यान देने की बात  
 है कि संरक्षक वर्ग की साधु-सन्ध्याती बनाना Plato का इद्देअ  
 नहीं था। साधु तो प्रहमचर्य होता है लेकिन लोथे ने शारीरिक  
 आवश्यक माना है। साथ-ही-साथ जहाँ सन्ध्याती शारीरिक वासना  
 को पूरा मानता है वहीं Plato उन्हें बुरा नहीं मानता। इसका  
 फिर्का है कि यौन-क्रिया सभी बुरी होती है जब वह आसकों  
 से उत्पन्न होती है।